Name of the College - A.P.S.H College Barauni
Name -> Dr. Rajesh Kumar Suman
Designation -> [GT]
Date -> 26.4.2021
Class -> B.A Part-II [H]
Unit -> 04
Paper -> IInd
Name of the topic -> National Income Accounts - GDP

⇒ राष्ट्रीय आय लेखांकन का महत्व।
[Importance of National Income Accounting]

⇒ राष्ट्रीय आय का सामाजिक लेखांकन किसी भी अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति को प्रतिबिम्बित करता है तथा देश के आर्थिक स्वास्थ्य में सुधारने के लिए विश्लेषण का प्रस्तुत करता है।

⇒ निम्नलिखित आधार पर समाजिक लेखांकन के महत्व पर प्रकाश डालते हैं:

(1) लेन-देन के वर्गीकरण में महत्व [Significant in Transaction Classification]

(2) आर्थिक संरचना के समझने में महत्व: [Importance in Understanding Economic structure]

(3) विभिन्न क्षेत्रों के अन्तर्सम्बन्धों की जानकारी [Knowledge of Inter-relationship of Different sectors]

(4) तुलनात्मक अध्ययन [Comparative Study]

(5) श्रम-संघों के लिए महत्व [Significance for trade Unions]

(6) आर्थिक विकास का माप [Measure of Economic growth]

(7) आर्थिक नियोजन में सहायक [Helpful to Economic planning]

(8) आधारभूत आर्थिक क्रियाओं का रिकॉर्ड [Record of Basic Economic Activities]

(9) आर्थिक विश्लेषण के लिए महत्व [Significance for Economic Analysis]

(10) संरचनात्मक परिवर्तनों का ज्ञान [Knowledge of Structural change]

(11) अन्वेषक के लिए महत्व [Importance for Researchers]

Scanned with CamScanner

(1) लेन-देन के वर्गीकरण में महत्व → किसी देश आर्थिक क्रिया में असंख्य लेन-देन पाये जाते हैं जो "क्रय-विक्रय से आय के भुगतान, तथा प्राप्ति से, निर्यात-आयात से करों [Tax] के भुगतान आदि" से संबंध रखते हैं। सामाजिक लेखांकन का विशेष लाभ यह है कि वह इन विभिन्न प्रकार के लेन-देनों का उचित वर्गीकरण का इसका प्रस्तुतीकरण के रूप में करता है। और इनसे राष्ट्रीय आय, व्यय, बचत, विनियोग, उपभोग व्यय, उत्पादन व्यय और सरकारी व्यय, विदेशों के भुगतान एवं प्राप्तियों आदि के संबंध में जानकारी प्राप्त हो जाती है।

(2) आर्थिक संरचना के समझने में महत्व :- सामाजिक लेखांकन हमें न केवल राष्ट्रीय आय का ज्ञान करता है। अपितु उत्पादन एवं उपभोग के आकार, प्रावधान एवं बचत के स्तर तथा विदेशी व्यापार पर अर्थव्यवस्था की निर्भरता के बारे में भी जानकारी देता है।

(3) विभिन्न क्षेत्रों के अन्तर्संबंध की जानकारी :- इस विधि के द्वारा विभिन्न अन्तर्संबंध की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। तथा उनका तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है। ये लेखे (Account) उत्पादन क्षेत्र, वित्तीय क्षेत्र तथा शेष विश्व [Rest of the world] के राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में सापेक्षिक योगदान संबंधी मूल्यांकन में भी सहायता प्रदान करते हैं।

(4) तुलनात्मक अध्ययन :- सामाजिक लेखांकन के द्वारा विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है तथा भविष्य में उनकी आर्थिक स्थिति में घटित होनेवाले परिवर्तनों का अनुमान भी लगाया जा सकता है। अर्थव्यवस्था की प्रगति या अवनति सामाजिक लेखों (Account) में दिखाई देती है। इस के अतिरिक्त विभिन्न समयावधियों के बीच सामाजिक लेखांकन की तुलना करके हम अर्थव्यवस्था की गति दीर्घकालीन पथ की ज्ञात कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner

(5) श्रम-संघों के लिए महत्व! – श्रम-संघों तथा श्रम-संगठनों के लिए राष्ट्रीय आय लेखा [Income Account] का विशेष महत्व होता है। इस लेखा से उनको इस बारे में जानकारी मिलती है कि राष्ट्रीय आय के सृजन में श्रमिकों का क्या योगदान है तथा श्रमिकों और कर्मचारियों को वेतन तथा पारिश्रमिक के रूप में राष्ट्रीय आय का कितना हिस्सा मिल रहा है।

(6) आर्थिक विकास का माप → राष्ट्रीय आय आँकड़े किसी एक अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास के स्तर तथा आर्थिक कल्याण के स्तर के प्रतीक होते हैं। राष्ट्रीय आय लेखांकन एक समय अवधि में उत्पादन, उपभोग तथा पूंजी निर्माण की उपनति [Trend] के निर्धारण में सहायक होते हैं। राष्ट्रीय आय लेखांकन दो भिन्न-भिन्न समयों पर अर्थव्यवस्था में आर्थिक क्रियाओं के स्तर को मापने और उनकी तुलना में सहायक होते हैं

(7) आर्थिक नियोजन में सहायक :→ इनके द्वारा योजना आयोग को यह ज्ञात होता है कि आर्थिक नियोजन के लिए देश में कितने साधन उपलब्ध होंगे। विभिन्न क्षेत्रों के कौन से लक्ष्य निर्धारित किए जायें, योजना का आकार कितना होना चाहिए, विकास की दर कितनी होनी चाहिए। कौन-से क्षेत्रों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए संक्षेप में, आर्थिक नियोजन की सफलता के लिए राष्ट्रीय आय लेखे (Account) का बहुत महत्व है।

(8) आधारभूत आर्थिक क्रियाओं का रिकार्ड ! – राष्ट्रीय आय लेखों (Accounts) के द्वारा आँकड़ों का एक ऐसा ढाँचा प्राप्त होता है जिसकी सहायता से अर्थव्यवस्था की आधारभूत क्रियाओं अर्थात् उत्पादन, उपभोग तथा पूंजी निर्माण से सम्बन्धित रिकॉर्ड रखना सम्भव होता है।